डांगी

भारत की गौरवशाली देशी गोवंशीय विरासत

प्रस्तावना

भारत की धरती पर गोवंश की अनेक विशिष्ट नस्लों ने सदियों से अपनी अलग पहचान बनाई है। उनके इतिहास, उत्पत्ति, स्वरूप, गुण और उपयोग का विवरण पुरानी पुस्तकों, सरकारी रिपोर्टों, सर्वेक्षणों तथा अन्य ऐतिहासिक स्रोतों में बिखरा हुआ है।

यह संकलन उसी प्रामाणिक ऐतिहासिक सामग्री को एक स्थान पर प्रस्तुत करने और हिंदी पाठकों के लिए सरल एवं सुगम बनाने का प्रयास है। इसमें भारतीय गोवंश के इतिहास, पहचान और विशेषताओं से संबंधित जानकारी को मूल स्रोतों के आधार पर प्रस्तुत किया गया है।

यह संकलन किसी नस्ल का आधुनिक वैज्ञानिक मूल्यांकन नहीं, बल्कि ऐतिहासिक स्रोतों में दर्ज उसके स्वरूप, विशेषताओं और इतिहास को आज के पाठक तक पहुँचाने का एक विनम्र प्रयास है।

|| मातरः सर्वभूतानां गावः सर्वसुखप्रदाः ||

मूल स्रोत
पुस्तक: Breeds of Indian Cattle, Bombay Presidency
लेखक: K. Hewlett
प्रकाशन वर्ष: 1912

पुस्तक की ऑनलाइन PDF प्रति: | www.surbhisewa.com

अनुवाद संबंधी सूचना

यह हिंदी पाठक संस्करण कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) की सहायता से तैयार किया गया है। किसी तथ्य अथवा अनुवाद में अंतर पाए जाने पर संबंधित मूल पुस्तक को ही अंतिम और प्रमाणिक स्रोत माना जाए।

डांगी गोवंश

मूल स्रोत: के. हेवलेट, बॉम्बे प्रेसीडेंसी के भारतीय गोवंश, 1912

नाम और मुख्य प्रजनन क्षेत्र

इस नस्ल को कभी-कभी 'घाटी' (घाटी/घाटी) और कभी 'कोंकणी' भी कहा जाता था, किंतु 'डांगी' नाम अधिक सामान्य था। लेखक के अनुसार यह नाम घाटों के आसपास के पहाड़ी देश से इसके संबंध को दर्शाता है।

इसका मुख्य प्रजनन नासिक, अहमदनगर और पूना जिलों के पश्चिमी भागों तथा ठाणे जिले के पूर्वी भाग में होता था। इसके पशु बांसदा, धरमपुर, जव्हार और डांग रियासतों में भी मिलते थे।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 30 | पीडीएफ पृ. 54.

पशुपालक, झुंड और मौसमी चराई

डांगी पशुओं के मुख्य मालिक घाट के ऊपर बसे गाँवों के लोग थे। वे बड़े पैमाने पर चरवाहे और पेशेवर पशु-प्रजनक थे, किंतु भूमि के मालिक और कृषक भी होते थे। वर्षा के बाद जब अपने गाँवों के आसपास की चराई कम होने लगती, तब वे पशुओं को चरवाहों के साथ—जो सामान्यतः परिवार के ही सदस्य होते थे—घाट और घाट के नीचे के जंगलों में चरने भेजते थे।

ऐसे संयुक्त झुंडों में प्रायः 150–200 पशु हो सकते थे, किंतु वे एक व्यक्ति की संपत्ति नहीं होते थे। सामान्यतः एक मालिक के पास 20–30 से अधिक पशु नहीं होते थे।

ये झुंड सरकारी जंगलों की अपेक्षा डांग, बांसदा, धरमपुर या जव्हार की रियासतों के जंगलों में चराने के लिए ले जाए जाते थे, क्योंकि वहाँ चराई-शुल्क काफी कम था और प्रतिबंध भी बहुत कम थे।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 30 | पीडीएफ पृ. 54.

कार्य-क्षमता और जलवायु के प्रति अनुकूलता

डांगी अपने मूल क्षेत्र तथा सामान्यतः कोंकण में सामान्य खेत-कार्य और हल्की खिंचाई के लिए अच्छी तरह उपयुक्त बताया गया है। यह अधिक वर्षा और अधिक आर्द्रता वाली जलवायु में अच्छी तरह पनपता है।

इसके विपरीत, यदि इसे अधिक शुष्क जलवायु में ले जाया जाए जहाँ गर्मी तीव्र हो, तो लेखक इसे बहुत कम उपयोगी बताता है और लिखता है कि धूप में काम कराने पर यह शीघ्र थक जाता है। अपने मूल क्षेत्र और कोंकण में यह कठोर और पर्याप्त सहनशक्ति वाला है।

धान के खेतों में यह अच्छा काम करता है और पानी में भैंसों की तरह काम करने की क्षमता का विशेष उल्लेख है। नस्ल के कुछ पशु अच्छे दौड़-चाल वाले भी होते थे और इस उद्देश्य से 'चुकला' अथवा हल्की गाड़ियों में लगाए जाते थे।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 30 | पीडीएफ पृ. 54.

आकार

डांगी मध्यम आकार के गोवंश में आता है, किंतु अलग-अलग पशुओं के आकार में बहुत अधिक अंतर पाया जाता था।

पशु	कुकुद के पीछे ऊँचाई	छाती का घेरा
सांड / बैल	45–50 इंच (लगभग 114.3–127.0 सेमी)	58–62 इंच (लगभग 147.3–157.5 सेमी)
असाधारण बड़ा पशु	52 इंच तक (लगभग 132.1 सेमी)	70 इंच तक (लगभग 177.8 सेमी)
गाय	40–45 इंच (लगभग 101.6–114.3 सेमी)	55–60 इंच (लगभग 139.7–152.4 सेमी)

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 30 | पीडीएफ पृ. 54.

डांगी बैल (Dangi Bullock)

स्रोत: K. Hewlett, Breeds of Indian Cattle, Bombay Presidency, 1912

Plate XIX

"स्पष्टता के लिए चित्र को रंगीन किया गया है।"

माप / Dimensions (इंच / inches)

ककुट के शीर्ष तक ऊँचाई Height—Top of hump	ककुट के पीछे ऊँचाई Height—Behind hump	शरीर की लंबाई Length of body	शरीर का घेरा Girth	अगले पैर का घेरा Shank girth
50¼ इंच / inches	47¾ इंच / inches	55 इंच / inches	62 इंच / inches	6 इंच / inches

निचले पैर की लंबाई Length of shank	सींग की लंबाई Length of horn	चेहरे की लंबाई Length of face	माथे की चौड़ाई Breadth of forehead	कान की लंबाई Length of ear
6 इंच / inches	8 इंच / inches	20½ इंच / inches	8 इंच / inches	9 इंच / inches

रंग और समग्र गठन

रंगों में विविधता मिलती है, किंतु सबसे सामान्य रूप सफेद शरीर पर बड़े काले या गहरे भूरे अनियमित धब्बों वाला है। कभी-कभी एक ही रंग के पशु भी मिलते हैं, किंतु वे टूटे या चितकबरे रंग वाले पशुओं जितने सामान्य नहीं हैं।

अच्छे नमूनों का समग्र रूप मजबूत, सघन और ठोस बताया गया है।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 30–31 | पीडीएफ पृ. 54, 56.

सिर, सींग और 'निम्बुरी'

सिर और सींगों में काफी विविधता मिलती है। कई पशुओं में सींग पतले, अनियमित और धीरे-धीरे नुकीले होते हैं, जबकि कुछ में वे मोटे, बहुत छोटे और कुंद होते हैं। सींगों की आकृति भी बहुत बदलती है।

कुछ पशुओं में सींग पास-पास निकलकर खिल्लारी की तरह पीछे की ओर जाते हैं। अन्य में वे सिर के पार्श्व भाग से निकलकर ऊपर और बाहर की ओर उठते हैं, फिर आगे या भीतर की ओर मुड़ते हैं। कुछ पशुओं में यह आगे की ओर मुड़ाव नहीं होता।

लेखक लिखता है कि 'निम्बुरी' हमेशा उपस्थित रहती है, हालांकि उसका विकास सभी पशुओं में समान नहीं होता।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 31 | पीडीएफ पृ. 56.

चेहरा, कान और शरीर

चेहरा सामान्यतः लंबा और संकरा तथा मुखाग्र बड़ा है। माथा सामान्यतः समतल होता है, किंतु कुछ पशुओं में उभरा हुआ भी मिल सकता है। कान छोटे और नुकीले हैं तथा नीचे नहीं लटकते।

नर में कुकुद अच्छी तरह विकसित होता है। गलकम्बल भी अच्छी तरह विकसित है। छाती मध्यम रूप से विशाल है। पिछला भाग और कूल्हा स्पष्ट रूप से ढलान लिए रहता है और पूँछ लंबी होती है।

अधिकांश अच्छे पशुओं में हड्डी अच्छी होती है, किंतु निम्न श्रेणी के पशुओं में वह बहुत हल्की हो सकती है। खुर छोटे, सुडौल, कठोर और काले होते हैं।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 31 | पीडीएफ पृ. 56.

दुग्ध-क्षमता, नस्लीय स्थिरता और सुधार की संभावना

गायों को कम दूध देने वाली बताया गया है। लेखक स्पष्ट करता है कि उस समय नस्ल के लक्षण पूरी तरह स्थिर नहीं थे और मालिक निश्चित प्रकार के अनुसार प्रजनन पर ध्यान नहीं देते थे।

फिर भी लेखक मानता है कि सावधानीपूर्वक चयन और मेल से इस नस्ल में सुधार की पर्याप्त संभावना थी। उसके अनुसार घाट के नीचे के सभी जिलों के लिए यह सबसे उपयुक्त नस्ल है और कोंकण में सामान्यतः मिलने वाले कमजोर, मिश्रित और अवनत दक्कनी प्रकार के पशुओं से कहीं श्रेष्ठ है।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 31 | पीडीएफ पृ. 56.

उपलब्धता, मेले और बाजार

नस्ल के पशु आसानी से प्राप्त नहीं होते थे, जब तक कोई सीधे उन तालुकों में न जाए जहाँ उनका प्रजनन होता था। कुछ पशु म्हासा मेले में लाए जाते थे और कुछ घाट के ऊपर के जिलों के साप्ताहिक बाजारों में बेचे जाते थे।

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 31 | पीडीएफ पृ. 56.

1912 में दर्ज कीमतें

लेखक के अनुसार कीमतों में काफी अंतर था।

पशु / श्रेणी	कुकुद के पीछे ऊँचाई
काफी अच्छा बैल	लगभग ₹60
बेहतर श्रेणी का बैल	₹75–₹100
असाधारण रूप से अच्छा पशु	₹100–₹150
निम्न श्रेणी का पशु	₹30–₹40
गाय	₹20–₹40

स्रोत-संदर्भ: मूल मुद्रित पृ. 31 | पीडीएफ पृ. 56.

माँ है, शब्दों से नहीं,
आँखों से बोलती है।
इसके सीने पर अपना कान लगाओ तो सही।
हर धड़कन में दुलार है,
कुछ देर तुम भी इससे बतलाओ तो सही।
तुम्हारे हर दर्द को अपने में समेट लेगी,
बस माँ कहकर इससे लिपट जाओ तो सही।
गौ माता राष्ट्रमाता
सेवा करें
संरक्षण करें
संवर्धन करें
www.surbhisewa.com